# लोक चित्र कलाओं द्वारा रोजगार एवं आय सृजन (अयोध्या नगर से सम्बन्धित सर्वेक्षण आधारित एक अध्ययन)

***सरिता द्विवेदी,***
*शोधार्थी,*
*मोनाड विश्वविद्यालय, हापुड (उ0प्र0)*

## प्रस्तावना

लोक कला देश के हर क्षेत्र में अपने क्षेत्र की संस्कृति की कहानी को विश्लेषित करती है। लोक कला जन जीवन का अभिन्न अंग है। साथ ही यह ग्रामीणों के मनोभावों के अतिरिक्त, सौन्दर्य, कलात्मक अभिव्यक्ति, लोक रंजकता आदि की सहज अनुभूति कराती है। लोक कलायें अपने में गूढ़ रहस्य छुपाये हुए हैं। हर क्षेत्र की लोक कला कहीं न कहीं एक दूसरे से मिलती–जुलती है और सभी क्षेत्रों में लोक कलायें शुभ अवसर पर तथा मंगलकामना के लिये चित्रित होती हैं। प्रत्येक क्षेत्र की लोक कलाओं में भले ही थोड़ी बहुत भिन्नता हो परन्तु सबका सार एक ही होता है। असत्य पर सत्य की विजय तथा परोपकारी व्यक्ति को सम्मान। किसी स्थान विशेष की अस्मिता की सही पहचान पाने के लिए न केवल वहां के साहित्य एवं सांस्कृतिक मूल्यों का आंतरिक परीक्षण आवश्यक है, वरन् वहां की लोक कला का मूल्यांकन भी आवश्यक एवं उपयोगी है। मानवीय मूल्यों के मानवीकरण में लोक कलाओं की भूमिका सदैव प्रमुख रही हैं। अयोध्या आर्यो की सांस्कृतिक राजधानी रही है, इसे विश्व का प्रथम राज्य केन्द्र होने का गौरव प्राप्त है। अयोध्या की संस्कृति और लोक जीवन, प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं लोक जीवन का आदर्श रूप प्रस्तुत करता है। अत्यन्त प्राचीन काल से अयोध्या के निवासियों का दैनिक जीवन उनके मनोभाव आदर्श एवं उनकी लोक कला के माध्यम से प्रस्फुटित होते रहे है। अयोध्या क्षेत्र में लोक चित्र कलाओं से जुड़े विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने के लिए प्रतिदर्श का सहारा लिया गया, अध्ययन की दृष्टि से चार क्षेत्रों में दैव प्रतिदर्श के आधार पर अयोध्या को चार क्षेत्रों विभक्त करते हुए चयनित किया गया जो निम्नवत् है–

1. पूर्वी अयोध्या
2. पश्चिमी अयोध्या
3. उत्तरी अयोध्या
4. दक्षिणी अयोध्या

चयनित क्षेत्रों में से पुनः प्रतिदर्श के आधार पर पॉच मोहल्ले का चयन किया गया। चयनित मोहल्लों में से प्रत्येक मोहल्लें में से दस परिवारों को चयनित किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य में व्यक्तिगत सर्वेक्षण हेतु तीन चरणीय दैव प्रतिदर्श को अपनाते हुए अन्ततः प्रत्येक चयनित मोहल्लें में ऐसे दस–दस परिवारों का चयन किया गया, जो लोक चित्र कला से लाभान्वित हुए है। इस प्रकार पूर्व निर्धारित प्रश्नावली के आधार पर व्यक्तिगत सर्वेक्षण करते हुए प्रत्येक क्षेत्र में 50 परिवारों को प्राथमिक सर्वेक्षण की परिधि में लाया गया। तालिका संख्या–01 में दैव प्रतिदर्श पद्धति के अन्तर्गत चयनित क्षेत्र, चयनित मोहल्लें एवं चयनित परिवारों की संख्या प्रदर्शित की गई है–

**तालिका सं0 1**

**अयोध्या नगर चयनित क्षेत्र/चयनित मोहल्ला/परिवार**

| क्र0 सं0 | चयनित क्षेत्र | चयनित मोहल्ला | चयनित परिवारों की संख्या | प्रति क्षेत्र चयनित परिवारों की संख्या |
|---|---|---|---|---|
| 1. | पूर्वी अयोध्या | 1. कारसेवक पूरम्<br>2. सीताकुण्ड<br>3. राम नगर<br>4. मणिराम छावनी<br>5. जानकी घाट | 10<br>10<br>10<br>10<br>10 | 50 |
| 2. | पश्चिमी अयोध्या | 1. साई नगर<br>2. रानोपाली<br>3. ब्रह्मकुण्ड<br>4. राम कोट<br>5. विभिषणकुण्ड | 10<br>10<br>10<br>10<br>10 | 50 |
| 3. | उत्तरी अयोध्या | 1. कन्धारपुर<br>2. टडी बाजार<br>3. स्वर्ग द्वार<br>4. राम की पैडी<br>5. नागेश्वर नाथ | 10<br>10<br>10<br>10<br>10 | 50 |
| 4. | दक्षिणी अयोध्या | 1. साकेतपुरी<br>2. विद्याकुण्ड<br>3. काजि पुरम्<br>4. रेलवे कालोनी<br>5. हलकरन का पुरवा | 10<br>10<br>10<br>10<br>10 | 50 |
| | | | **कुल सर्वेक्षण हेतु परिवार** | 200 |

स्वतः सर्वेक्षण (2016–17)

## खण्ड दो
## अयोध्या क्षेत्र में लोक चित्र कलाओं से रोजगार एवं आय सृजन

अयोध्या क्षेत्र में लोक चित्रकलाओं से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के धार्मिक अनुस्ठानों एवं त्योहारो से आय सृजन की गणना के लिए समलित किये जाने वाले घटक तालिका सं0–02 में प्रदर्शित किये गये हैं। जिन्हें व्यक्तिगत सर्वेक्षण के दौरान चयनित परिवारों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर विश्लेषित किया गया है।

### तालिका सं0–02

### लोक चित्र कला की विधाओ से औसत आय सृजन

| क्र. सं. | सांस्कृतिक एवं धार्मिक अनुष्ठान कार्यक्रम | अयोध्या नगर प्रतिव्यक्ति औसत कार्यदिन (1 वर्ष में) | | | | अयोध्या नगर का औसत कार्य दिन | औसत आय प्रति दिन (रू0 में ) | क्षेत्र वार प्रति व्यक्ति औसत आय (1 वर्ष में) | | | | अयोध्या क्षेत्र का औसत |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | पूर्वी अयोध्या | पश्चिमी अयोध्या | उत्तरी अयोध्या | दक्षिणी अयोध्या | | | पूर्वी अयोध्या | पश्चिमी अयोध्या | उत्तरी अयोध्या | दक्षिणी अयोध्या | |
| 1. | पर्व एवं त्योहार | 90 | 85 | 95 | 80 | 87.5 | 120 | 10800 | 10200 | 11400 | 9600 | 10500 |
| 2. | धार्मिक अनुष्ठान, पूजा एवं व्रत इत्यादि | 85 | 80 | 90 | 100 | 88.75 | 110 | 9350 | 8800 | 9900 | 11000 | 9762.5 |
| 3. | मेला, हाट, प्रदर्शनी, रैली तथा कार्यशाला आदि | 115 | 120 | 100 | 110 | 111.25 | 115 | 13225 | 13800 | 11500 | 12650 | 12793.75 |
| | योग | 290 | 285 | 285 | 290 | 287.5 | | 33375 | 32800 | 32800 | 33250 | 33056.25 |

स्वतः सर्वेक्षण (2016–17)

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि पूर्वी अयोध्या में प्रतिव्यक्ति औसत कार्य दिन की उपलब्धता एक वर्ष के पर्व एवं त्योहार, धार्मिक अनुष्ठान पूजा व्रत आदि कार्यो एवं मेला, हाट, प्रदर्शनी एवं कार्यशाला से क्रमशः 90, 85 एवं 115 दिन रहती है। कुल 290 दिन इस क्षेत्र में लोगों को लोक चित्रकला के कार्यक्रमों से रोजगार प्राप्त हैं शेष 85 दिन व्यक्ति अपने खेतों या अन्य जगहो में काम करते है। पूर्वी अयोध्या में आय की बात करे तो प्रतिव्यक्ति 1 वर्ष में औसतन 33375 रू0 की आय लोक चित्र कला की विभिन्न विधाओं के व्यावसायीकरण द्वारा प्राप्त होती है अर्थात् 2781 रू0 मासिक। इसी तरह पश्चिमी अयोध्या में प्रतिव्यक्ति औसत कार्यदिन 285 एवं प्रतिव्यक्ति औसत आय वार्षिक 32800 रू0 अर्थात् 2733 रू0 मासिक आय है। उत्तरी अयोध्या में प्रति व्यक्ति औसत कार्यदिन (वार्षिक) 285 दिन एवं आय प्रतिव्यक्ति औसत वार्षिक आय 32800 रू0 है।

दक्षिणी अयोध्या में लोक चित्र कलाओं के कार्यक्रमों के द्वारा प्रतिव्यक्ति औसत कार्य दिन (एक वर्ष में) कुल 290 दिन है, एवं प्रतिव्यक्ति औसत आय वार्षिक 33250 रू0 है। तालिका के

आधार पर यदि अयोध्या नगर क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में रोजगार एवं आय की गणना करे तो स्पष्ट है कि अयोध्या क्षेत्र में लोक चित्र की विभिन्न विधाओं के बाजार अवसर के तहत पर्व एवं त्योहार कार्यों से 87.5 दिन औसत रोजगार कार्य, धार्मिक अनुष्ठान पूजा, व्रत आदि तथा हाट, मेला, प्रदर्शनी, रैली तथा कार्यशाला आदि से क्रमशः 88.75 एवं 111. 25 दिन कार्य मिलता है अर्थात 1 व्यक्ति को 1 वर्ष में 287.5 दिन कार्य मिलता है। आय प्राप्ति की दृष्टि से पर्व एवं त्योहार द्वारा 10500 रू0 वार्षिक, धार्मिक अनुष्ठान, पूजा, व्रत आदि एवं हाट, मेला, प्रदर्शनी, रैली तथा कार्यशाला आदि से क्रमशः 9762.5 रू0 एवं 12793.75 रू0 वार्षिक आय प्राप्त होती है अर्थात एक व्यक्ति को अयोध्या क्षेत्र में कुल 33056.25 रू0 औसत आय प्राप्त होती है।

उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि अयोध्या नग क्षेत्र में लोक चित्र कला की विभिन्न विधाओं ने वर्तमान में जहाँ प्राचीन धार्मिक की विचार धारा को सतह पर मजबूत बनाया है वही इन कलाओं के स्वरूप ने लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराके उनकी आय में वृद्धि की है फलस्वरूप लोगों के जीवन स्तर में सुधार आया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में चयनित क्षेत्र में संसाधनों की उपलब्धता एवं उसकी लोचशीलता का भी विषय के क्रम में विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया है। शोध समस्या के उपरान्त विश्लेषण एवं निर्वाचन तक कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये जाते हैं, जैसे शोध समस्या क्या हो? विश्लेषण के लिये कौन सी तकनीक का प्रयोग किया जाय? आँकड़ों की संकलन किस प्रकार हो? परिकल्पनाओं का परीक्षण किस प्रकार किया जाय आदि। प्रस्तुत शोध पत्र अयोध्या नगरी की लोक चित्रकला द्वारा रोजगार एवं आय सृजन से संबंधित है। इसमें हमने साक्षात्कार साहित्य अध्याय तथा स्वतः सर्वेक्षण फोटोग्राफी द्वारा शोध सामग्री का संकलन किया है।

शोध विधि में साक्षात्कार, अयोध्या नगर का भ्रमण तथा फोटोग्राफी आदि विधि द्वारा शोध सामग्री एकत्र की गयी है। साक्षात्कार में अयोध्या नगर के 200 चयनित परिवारों का साक्षात्कार किया गया जो कि लोक कलाओं के सम्बन्धित है तथा उन्हे अयोध्या के इतिहास, संस्कृति, सभ्यता तथा कला के बारे में जानकारी प्राप्त है साथ ही चयनित क्षेत्र के  ऐसे परिवारों का भी साक्षात्कार किया गया जो लोक कलाओं के विभिन्न विधाओं से व्यवसाय प्राप्त करते हुए अपना जीवन यापन कर रहे हैं। साक्षात्कार के दौरान अयोध्या की ग्रामीण महिलाओं से मिलकर यहाँ की लोक कला के स्वरूप, इतिहास तथा उनके अर्थ के बारे में भी अपेक्षित जानकारी प्राप्त की गई। स्वतः सर्वेक्षण के दौरान शोध के लिये लोक चित्रों की फोटोग्राफी भी ली गई जो अयोध्या की लोक कला का पूर्ण स्वरूप बताती है। सम्बन्धित फोटोग्राफी का विवेचन निम्नवत् है :–

चित्र–1.1
कनक भवन में विराजित श्रीराम जानकी विग्रह
(स्वतः सर्वेक्षण 2016–2017)

चित्र–1.2
हनुमानगढ़ी अयोध्या में हनुमान जी का विग्रह
(स्वतः सर्वेक्षण 2016–2017)

चित्र–1.3
बाँस द्वारा टोकरी बनाती महिला
(स्वतः सर्वेक्षण 2016–2017)

चित्र–1.4
व्रत पूजन के लिये लोकचित्रण करती महिला
(स्वतः सर्वेक्षण 2016–2017)

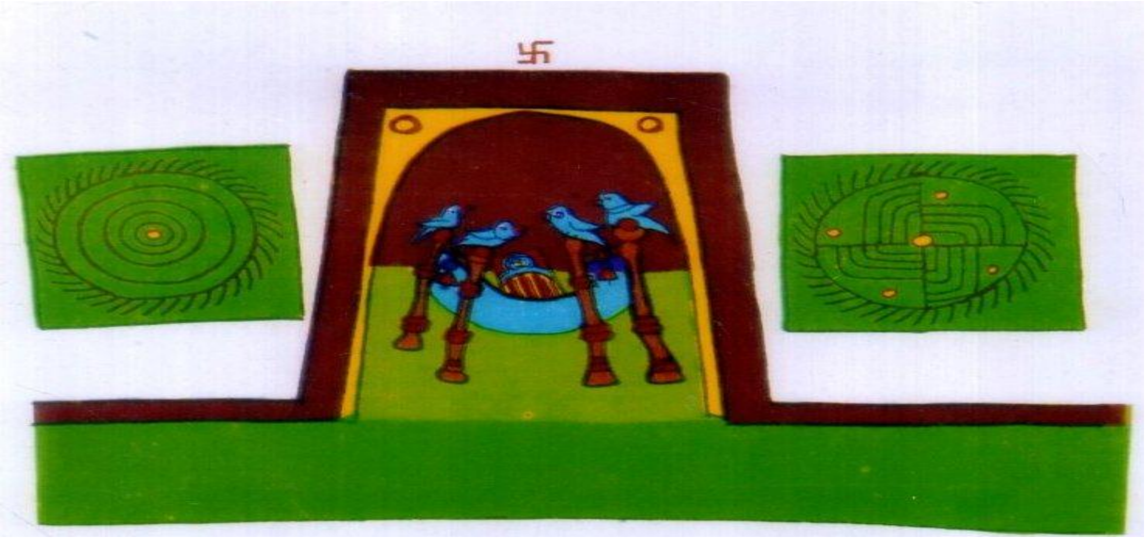

चित्र–1.5
राम नवमी पर बनाया गया लोकचित्र
(स्वतः सर्वेक्षण 2016–2017)

चित्र–1.6
सावन मेले पर बना लोक चित्र
(स्वतः सर्वेक्षण 2016–2017)

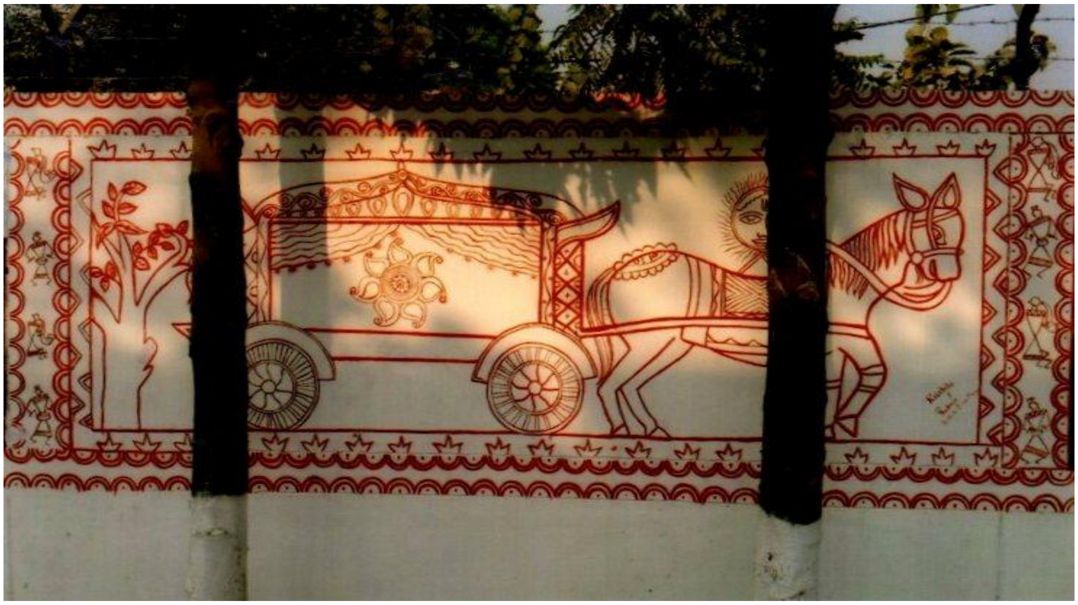

चित्र–1.7
अयोध्या की भित्ति पर चित्रित लोक चित्र
(स्वतः सर्वेक्षण 2016–2017)

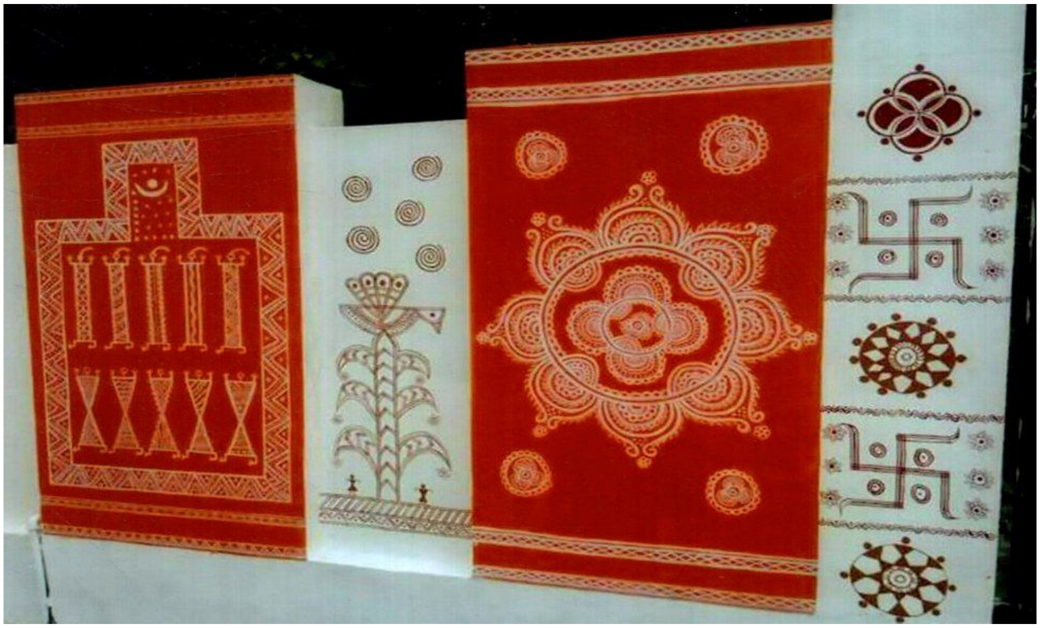

चित्र–1.8
अयोध्या की दीवालों पर बना लोक चित्र
(स्वतः सर्वेक्षण 2016–2017)

## खण्ड तीन
## निष्कर्ष एवं सुझाव

शोध सर्वेक्षण के दौरान अयोध्या नगर से सम्बन्धित प्रश्नावाली आधारित परिकल्पनाओं के साथ जब विभिन्न बिन्दुओं पर चयनित परिवारों से शोध विश्लेषण किया गया तो लोगों ने बड़े ही उत्सुकता के साथ समस्त जानकारियाँ उपलब्ध कराईं। पूर्व निधारित प्रश्नावली के आधार पर चयनित क्षेत्र के 200 ऐसे परिवारों को प्राथमिक सर्वेक्षण की परिधि में लाया गया जो कि किसी न किसी रूप में लोक चित्र कलाओं की विभिन्न विधाओं से सम्बन्धित रहे और लोग आज लोक चित्र कला की व्यावहारिक महत्व को भी अनुपालित कर रहे हैं। सर्वेक्षण के दौरान जब चयनित परिवारों से लोक चित्र कला के बारे में पूछा गया तब 20 प्रतिशत लोगों ने ही इसके अर्थ को बतलाया शेष 80 प्रतिशत लोगों ने इसके स्वरूप के जानने की बात कही लेकिन वे इसके पारिभाषिक रूप से परिचित नही थें।

सर्वेक्षण के दौरान जब चयनित लोक कला के धार्मिक एवं पौराणिक महत्व के बारे में पूछा गया तब 95 प्रतिशत परिवारों के द्वारा इसे अति महत्वपूर्ण बताया गया जबकि 5 प्रतिशत लोगों में स्पष्टता परिलक्षित नही हुई। स्वतः सर्वेक्षण के दौरान जब चयनित परिवारों से कृषि उपज एवं लोक पर्व में अन्तर सम्बन्ध के बारे में पूछा गया 65 प्रतिशत परिवारों ने इसमें धनात्मक सम्बन्ध की बात बताई जबकि 35 प्रतिशत परिवारों ने इसके सम्बन्ध के बारे में कोई तर्क पूर्ण उत्तर नहीं दिया। सर्वेक्षण के दौरान जब लोगों से चित्र कला एवं मूर्तिकला में प्रमुखता से बात की गई तो 78 प्रतिशत लोगों ने इसके दोनों की महत्व को स्वीकार किया जबकि 22 प्रतिशत लोगों ने सभी कलाओं को महत्वपूर्ण बताया।

स्वतः सर्वेक्षण के दौरान जब चयनित परिवारों से धर्म, लोक कला एवं चित्र कला के बारे में पूछा गया तब 92 प्रतिशत लोगों ने इसमें बहुत ही गहन एवं अन्तरंग सम्बन्ध होने की बात कही। सर्वेक्षण के दौरान जब अयोध्या क्षेत्र के लोगों से लोक कलाओं के व्यावसायिक स्वरूप के बारे में पूछा गया 72 प्रतिशत परिवारों ने इसके परम्परागत व्यावसायिक स्वरूप किया। जबकि 28 प्रतिशत लोगों ने इसके बदलते हुए आधुनिक व्यावसायिक के बारे में शोधकर्ता को अवगत कराया।

अयोध्या क्षेत्र में जब लोक चित्र कलाओं को जीवकोपार्जन के एक स्रोत के रूप में पूछा गया तो 55 प्रतिशत लोगों ने इसे जीवकोपार्जन का एक साधन माना, 30 प्रतिशत परिवारों ने धार्मिक एवं सांस्कृति आवश्यकता माना और 15 प्रतिशत लोगों ने इसे स्वयं संतुष्टि का आधार माना। शोधार्थी द्वारा जब लोक चित्र कलाओं के द्वारा वर्तमान में रोजगार की सम्भावना के बारे में पूछा गया तब 45 प्रतिशत लोगों ने इसे रोजगार एवं आय का एक साधन मानां।

सर्वेक्षण के दौरान जब लोक चित्र कलाओं से आय अर्जन के बारे में पूछा गया तब 84 प्रतिशत लोगों ने इससे लगभग 3000 मासिक आय होने की बात स्वीकारी। शोधार्थी द्वारा जब चयनित परिवारों से लोक चित्र कला के द्वारा रोजगार प्राप्त करने की बात पूछी गयी तब 94 प्रतिशत लोगों ने परिवार एक से डेढ़ प्रतिशत लोगों को रोजगार मिलने की बात स्वीकार की।

सर्वेक्षण के दौरान जब अयोध्या के चित्र कलाओं के विकास में सरकारी सहयोग एवं भूमिका के बारे में पूछा गया तो चयनित क्षेत्र के 75 प्रतिशत परिवार सरकारी भूमिका से असन्तुष्ट रहे जबकि 25 प्रतिशत परिवार कुछ हद तक सरकारी भूमिका से संस्तुष्ट रहे। सर्वेक्षण के दौरान यह भी पाया गया कि लोक चित्र कलाओं के विभिन्न स्वरूपों में 74 प्रतिशत महिलाएं बड़ी सक्रियता के साथ इन कलाओं के विकास में अपना योगदान दे रही हैं।

शोधार्थी द्वारा जब स्थानीय लोक कलाओं के विकास के जरूरी आवश्यकताओं की

उपलब्धता के बारे में जानकारी प्राप्त की तब 57 प्रतिशत लोगों ने यह बताया कि इस कला के विकास के लिये साख की व्यवस्था, प्रशिक्षण, प्रदर्शनी एवं मेले आयोजन आदि की बात कही। सर्वेक्षण के दौरान जब अयोध्या क्षेत्र में लोक चित्र कलाओं के बदलते स्वरूप के बारे में पूछा गया तब 87 प्रतिशत लोगों ने इसके स्वरूप में व्यावसायिक एवं तकनीकी परिवर्तन की बात स्वीकारी।

सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि पूर्व निर्धारित परिकल्पना आधारित प्रश्नावली की परिकल्पना एक सीमा तक सत्य पायी गई। अयोध्या नगर क्षेत्र में लोक चित्र कालाओं से सम्बन्धित विभिन्न विधाओं के स्वरूपों में निरन्तर परिवर्तन हो रहा है। साथ ही स्थानीय लोक चित्र कलाएं रोजगार एवं आय के अवसर भी प्रदान कर रही हैं। यदि संरचनात्मक सुविधाओं का पर्याप्त विकास कर दिया जाय और सरकारी सुविधाओं एवं प्रयासों को धनात्मक सोच के साथ लागू किया जाय तो निश्यिचत रूप से लोक चित्र कलायें अपने मूल स्वरूप को संरक्षित करते हुए अयोध्या नगर क्षेत्र के विकास में अपनी महती भूमिका निभाने में सफल होंगी।

## संदर्भ सूची


1. सक्सेना, डॉ. बिहारी लाल, डॉ. श्रीमती सुधा सरन, डॉ. आनन्द लखटकिया– कला सिंद्धात और परम्परा (भारतीय चित्रकला की सैद्धान्तिक विवेचना) प्रकाश बुक डिपो बरेली, पुनः मुद्रण–2010।
2. सत्येन्द्र, डॉ. लोक साहित्य विज्ञान, राजस्थानी ग्रन्थागार, जयपुर, द्वितीय संषोधित संस्करण–2006।
3. साखलकर, आर.बी.– कला के अन्तर्दर्षन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, द्वितीय संस्करण–2008।
4. सिवाच, डॉ. विद्या– तुलसी का सौन्दर्य बोध, आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–1997।
5. स्वतः सर्वेक्षण 2016–2017।
6. उत्तर प्रदेश वार्षिकी–2016, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उत्तर प्रदेश, ।
7. सामाजार्थिक समीक्षाः जनपद फैजाबाद, वर्ष 2015–16, कार्यालय अर्थ एवं संख्याधिकारी, विकास भवन, फैजाबाद ।
8. भारत (2017), प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, ।